मान्यवर,

कायस्थ, एक बुद्धिजीवी, विचारनिष्ठ एवं कर्तव्यपरायण परम्परा है जो एकता का सूत्र बनकर राष्ट्रीय धारा में समाहित हैं। राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता की रक्षा में अपना सर्वस्व अर्पण कर भारत को एक बलशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली राष्ट्र का रूप देना उनका उद्देश्य रहा है। आज भी जहाँ कायस्थ हैं, वे अपनी विलक्षणता, बुद्धिमता तथा न्यायप्रियता के कारण बुलन्दी पर खड़े हैं ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ प्रेरणा स्रोत है "जिनको नहीं निज धर्म व निज जाति का अभिमान है, वह नर नहीं नर पशु नित और मृतक समान हैं"।

इसी प्रसंग में 'मैक्समुलर' की उक्ति है-जो जाति अपने अतीत, साहित्य और इतिहास पर गर्व अनुभव नहीं करता, वह अपने राष्ट्रीय चरित्र का मूल आधार खो देती है।

इतिहास साझी है कि चित्रगुप्त वंशजों ने देश और दुनिया को बहुत कुछ दिया है। स्वामी विवेकानंद, राजा टोडरमल, खुदीराम बोम, बटुकेश्वर दत्त, लाला हरदयाल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, लाला लाजपत राय, देशबंधु चितरंजन दास, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भारतरत्न लाल बहादुर शास्त्री, कथाशिल्पी मुंशी प्रेमचंद, डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा, जगदीश चंद बसु, गणेश शंकर विद्यार्थी, कवि महादेवी वर्मा, शांति स्वरूप भटनागर जैसी अनेक विभूतियाँ ने भारत को गौरवशाली बनाया है।

कायस्थ शिक्षा, न्याय, प्रशासन तथा संसार में कानून व अनुशासन के संरक्षण की एक संस्कृति है। कायस्थ एक खुशबू है, एक गुलदस्ता है, रहन-सहन का एक तरीका है। एक बुद्धिजीवी समुदाय है, एकवंश है, चित्रगुप्त महापरिवार है। हम जाति विहीन हैं तथा सभी जाति वर्ग हमारे लिए समान हैं। हमको भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज से प्रेरणा प्राप्त होती रही है। कायस्थ पूरे समाज का अति महत्वपूर्ण, अभिन्न एवं अपरिहार्य अंग रहा है। कायस्थ हमेशा से कला के धनी तथा कलम के सिपाही रहे हैं। कायस्थ भारत की अन्य प्रमुख वर्गीय व्यवस्थाओं की संस्कृति से अलग संस्कृति है। कहते भी हैं कि जीवित कौम वह होती है जो इतिहास से प्रेरणा लेती है और उनमें प्रेरित होकर वर्तमान की पृष्टभूमि में स्वर्णिम भविष्य की रूपरेखा तैयार करती है।

कायस्थ क्या है? कायस्थ का अर्थ है काया स्थित परमतत्व। आत्मा का ज्ञानी। साथ ही काया पंच महाभूत से निर्मित है। वस्तुतः काया एवं आत्मा के संबंध ज्ञान का ज्ञाता ही कायस्थ है। ज्ञान हमारा बहुमूल्य आभूषण है एवं ज्ञान के कारण ही हमारी ख्याति सारे भूमंडल में व्याप्त है। वह नैतिकता का आधार है और न्याय एवं प्रशासन का मूल अंग है। वह कलम-दवात एवं कर्म का पुजारी है।

कायस्थ वंश के लोगों को अपनी समस्याओं के समाधान का एकमात्र उपाय अपने वंश को मजबूत करना है। विचारों में परिवर्तन लाना समय की पुकार है। आज आवश्यकता है अपने भीतर सकारात्मक सोच पैदा करने की। लोकतंत्र में बिना एकता के सामाजिक स्तर पाना कठिन है।

अतः अब समय आ गया है कि पूरे देश में कायस्थों को एकसूत्र में बांधा जाय, ताकि समाज में जो गरीबी से अभिशप्त जीवन जी रहे हैं, उनका उद्धार हो सके। राष्ट्रीय संरचना समाज की विकासोन्मुखता की परिणति है। देश का सर्वांगीण विकास समाज के सुपुष्ट एवं सबल होने पर ही कार्यान्वित हो सकता है।

कायस्थों की आबादी भारत में घनी हो गयी है। कायस्थ उत्तर से चलकर सारे देश में फैल गये हैं, ये कभी भी पृथक अस्तित्ववादी, चापलूस तथा भाग्यवादी नहीं रहे। कायस्थों की प्रतिष्ठा उनके कठिन परिश्रम, सहिष्णुता तथा समझ के अनुकूल अपने को बदलने का प्रतिफल है। कलम ही उनकी पूंजी है और कलम ही जीविका का आधार।

आज पूरा देश बदलती परिस्थिति से आक्रांत है। कायस्थ समाज की अस्मिता पर चौतरफा प्रहार हो रहा है, कायस्थ सदा से श्रमजीवी रहे हैं। जीविकापार्जन हेतु नौकरी करना ही हमारे लिए अभिष्ट रहा है। आरक्षण की राजनीति ने हमारे समाज की कमर तोड़ दी है। हमारे पुश्तैनी पेशे से हम ही महरूम हो रहे हैं और कलम हमसे छिन गया है। जो आरक्षण 10 वर्षों के लिए था वह अनिवार्य रूप से अब भी चल रहा है। परन्तु उसका लाभ केवल मलाईदार तबका ही उठा रहा है, जबकि दलित और वंचित समाज अब भी घोर गरीबी में पल रहा है। अतः वर्तमान के आरक्षण व्यवस्था को बदलना समय की मांग है। हमारा सुझाव है कि आरक्षण किसी भी प्रकार से सबलों को नही मिले बल्कि उन गरीबों को मिले जिन्हें अबतक आरक्षण का लाभ नही मिल पाया है।

इसी संदर्भ में कुछ अन्य मुद्दों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर एक कायस्थ एकता यात्रा आगामी 3 दिसम्बर, 2011 से भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के गांव जीरादेई (सीवान, बिहार) से चलकर झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश होते हुए दिल्ली पहुँचेगी। दिल्ली में इसका समापन "सद्भावना दिवस" के रूप में 5 फरवरी, 2012 को होगा।

यह यात्रा आपकी है। आप इसके सहभागी हैं अतः इसकी सफलता के लिए आप हर संभव योगदान करें और खुले मन से सबको शामिल होने के लिए प्रेरित करें।

इस यात्रा के माध्यम से हम निम्न उद्देश्यों के लिए चेतना जागृत करना चाहते हैं :-

1. भय, भूख और भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण ।
2. सुशासन एवं न्याय प्रणाली में बदलाव के जरिए दलित, किसान, मजदूर एवं वृद्ध और युवा वर्ग को त्वरित न्याय।
3. न्याय में पारदर्शिता।
4. शिक्षा पद्धति में बदलाव और रोजगार पूरक शिक्षा को प्राथमिकता।
5. उच्च शिक्षा में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर एवं दलित बच्चों को निःशुल्क सुविधा।
6. ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक केन्द्रीय विद्यालयों की स्थापना।
7. देश के हर राज्य में "एम्स" जैसी आधुनिक सुविधाओं से युक्त अस्पताल खोले जायँ और स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुचें।
8. नौकरियों में कायस्थों को 2 प्रतिशत आरक्षण ।
9. वर्तमान व्यवस्था में जिन परिवारों को आरक्षण का लाभ एक बार मिल चुका हो, उन्हें आरक्षण की सुविधा नहीं मिले। जिससे आरक्षण का लाभ अन्य वंचितों को मिल सके। आरक्षण का आधार केवल जातिगत न होकर आर्थिक भी रखा जाय।
10. महंगाई को नियंत्रित करना।
11. औद्योगिक विकास के लिए कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण नहीं किया जाय। औद्योगिक विकास के लिए ऊसर व बंजर भूमि का ही अधिग्रहण किया जाय।
12. बेरोजगारों को नौकरी मिलने तक बेरोजगारी भत्ता का प्रावधान हो।
13. "3 दिसम्बर" को "संविधान दिवस" घोषित किया जाय।
14. स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ देश के लिए हर जिले में नशामुक्ति केन्द्र, सांस्कृतिक केन्द्र और खेल-क्रीड़ा केन्द्र की स्थापना की जाय।
15. देश के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद की स्मृति में देश की राजधानी दिल्ली, पटना तथा जीरादेई में भव्य स्मारक का निर्माण किया जाय एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्मस्थान रामनगर, बाराणसी को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये।


| | | | |
|---|---|---|---|
| ए.सी. भटनागर | सिद्धार्थ श्रीवास्तव | सतीश कुमार | अरविन्द कुमार 'मुकुल' |
| 09911646060 | 09610006582 | 09968775950 | 09899318085 |
| अभय सिन्हा | अनिल सक्सेना | सुशील श्रीवास्तव | संजीव श्रीवास्तव |
| 09999271034 | 09818152407 | 09811118261 | 09810122330 |

पंजीकृत कार्यालय
सी-108, खिड़की एक्स.
पंचशील चिहार
मालवीय नगर, नई दिल्ली

www.Kayastha.com

पत्राचार कार्यालय
कामेश्वर श्रीवास्तव, 09810709092
57ए, प्रथम तल, खिर्जाबाद
न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, नई दिल्ली-65

# कायस्थ एकता यात्रा

**3 दिसम्बर 2011 से 5 फरवरी 2012**

**।। यात्रा-कार्यक्रम ।।**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. सीवान/छापरा | - | 03 दिसम्बर, 2011 | 34. चित्रकूट | - | 05 जनवरी, 2012 |
| 2. मुजफ्फरपुर | - | 04 दिसम्बर, 2011 | 35. इलाहाबाद | - | 06 जनवरी, 2012 |
| 3. मोतीहारी/सीतामढ़ी | - | 05 दिसम्बर, 2011 | 36. मीर्जापुर | - | 07 जनवरी, 2012 |
| 4. मधुबनी/दरभंगा/समस्तीपुर | - | 06 दिसम्बर, 2011 | 37. वाराणसी | - | 08 जनवरी, 2012 |
| 5. पटना | - | 07 दिसम्बर, 2011 | 38. रामनगर | - | 09 जनवरी, 2012 |
| 6. गया | - | 08 दिसम्बर, 2011 | 39. गाजीपुर/बलिया | - | 10 जनवरी, 2012 |
| 7. हजारीबाग | - | 09 दिसम्बर, 2011 | 40. मऊ/गोरखपुर | - | 11 जनवरी, 2012 |
| 8. धनबाद/बाकारो | - | 10 दिसम्बर, 2011 | 41. वस्ती/अयोध्या | - | 12 जनवरी, 2012 |
| 9. रांची | - | 11 दिसम्बर, 2011 | 42. फैजाबाद | - | 13 जनवरी, 2012 |
| 10. डालटेनगंज | - | 12 दिसम्बर, 2011 | 43. सुल्तानपुर | - | 14 जनवरी, 2012 |
| 11. रीवा | - | 13 दिसम्बर, 2011 | 44. प्रतापगढ़/अमेठी | - | 15 जनवरी, 2012 |
| 12. कटनी | - | 14 दिसम्बर, 2011 | 45. रायबरेली | - | 16 जनवरी, 2012 |
| 13. जबलपुर | - | 15 दिसम्बर, 2011 | 46. लखनऊ | - | 17 जनवरी, 2012 |
| 14. सागर | - | 16 दिसम्बर, 2011 | 47. लखनऊ | - | 18 जनवरी, 2012 |
| 15. भोपाल | - | 17 दिसम्बर, 2011 | 48. हरदोई | - | 19 जनवरी, 2012 |
| 16. इन्दौर | - | 18 दिसम्बर, 2011 | 49. सीतापुर/लखीमपुरखेरी | - | 20 जनवरी, 2012 |
| 17. उज्जैन | - | 19 दिसम्बर, 2011 | 50. शाहजांहनपुर | - | 21 जनवरी, 2012 |
| 18. राजगढ़ | - | 20 दिसम्बर, 2011 | 51. बरेली | - | 22 जनवरी, 2012 |
| 19. झालावाड़/कोटा | - | 21 दिसम्बर, 2011 | 52. बरेली | - | 23 जनवरी, 2012 |
| 20. चितौड़गढ़ | - | 22 दिसम्बर, 2011 | 53. पीलीभीत | - | 24 जनवरी, 2012 |
| 21. उदयपुर | - | 23 दिसम्बर, 2011 | 54. बहेड़ी/हल्दवानी | - | 25 जनवरी, 2012 |
| 22. जोधपुर | - | 24 दिसम्बर, 2011 | 55. रूद्रपुर | - | 26 जनवरी, 2012 |
| 23. अजमेर | - | 25 दिसम्बर, 2011 | 56. रामपुर | - | 27 जनवरी, 2012 |
| 24. जयपुर | - | 26 दिसम्बर, 2011 | 57. मुरादाबाद | - | 28 जनवरी, 2012 |
| 25. भरतपुर | - | 27 दिसम्बर, 2011 | 58. ब्रजघाट | - | 29 जनवरी, 2012 |
| 26. मथुरा/अलीगढ़ | - | 28 दिसम्बर, 2011 | 59. मेरठ | - | 30 जनवरी, 2012 |
| 27. आगरा | - | 29 दिसम्बर, 2011 | 60. गाजियाबाद | - | 31 जनवरी, 2012 |
| 28. मैनपुरी/इटावा | - | 30 दिसम्बर, 2011 | 61. नोएडा | - | 01 फरवरी, 2012 |
| 29. ग्वालियर | - | 31 दिसम्बर, 2011 | 62. गुड़गांव | - | 02 फरवरी, 2012 |
| 30. झांसी | - | 01 जनवरी, 2012 | 63. फरीदाबाद | - | 03 फरवरी, 2012 |
| 31. औरैया/कन्नौज | - | 02 जनवरी, 2012 | 64. द्वारका | - | 04 फरवरी, 2012 |
| 32. कानपुर | - | 03 जनवरी, 2012 | 65. दिल्ली | - | 05 फरवरी, 2012 |
| 33. फतेहपुर/बांदा | - | 04 जनवरी, 2012 | (दिल्ली में विशाल सद्भावना दिवस सम्मेलन का आयोजन) | | |

**भय, भूख और भ्रष्टाचार मुक्त समाज तथा कायस्थों के आरक्षण के लिए**

www.Kayastha.com

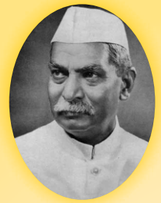
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

लाल बहादुर शास्त्री

सुभाष चन्द्र बोस

स्वामी विवेकानंद

जय प्रकाश नारायण

मुंशी प्रेमचंद

महाराजा टिकैत राय

महादेवी वर्मा

जगदीश चन्द्र वसु

एस. एस. भटनागर

# कायस्थ एकता यात्रा

**3 दिसम्बर 2011 से 5 फरवरी 2012**